B.A Part-1 - Subsidiary & Hons.

राजनीति शास्त्र के अध्ययन की प्रणालियाँ
Principal Methods of the study of Political Science

आज राजनीतिशास्त्र के लिए अध्ययन की प्रणालियों का महत्व इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि यह चेतनशील मनुष्यों का अध्ययन करता है इसकी विभिन्न प्रणालियों के अध्ययन के बिना हम सही सिद्धांतों का निर्धारण नहीं कर सकते। राजनीति शास्त्र के मूल सिद्धांतों, विभिन्न मान्यताओं और पहलूओं को हमें भली-भाँति समझने के लिए राजनीतिशास्त्र का वैज्ञानिक तथा सुनियोजित अध्ययन आवश्यक है। आधुनिक युग में राजनीति शास्त्र के विषय क्षेत्र का काफि Devlop हुआ है इसके अन्तर्गत नए-नए विषय तथा नए-नए आयामों का अध्ययन किया जा रहा है। राजनीतिशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है इससे स्पष्ट होता है कि समाजिक विज्ञान के साथ इसका सम्बन्ध होना अनिवार्य है।

अध्ययन-प्रणालियों की कठिनाइयाँ तथा अनिश्चितताएँ

(एक राजनीतिशास्त्री जब वैज्ञानिक प्रणालियाँ अपनाता है तो उसे अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है जो निम्न है।

(1) भौतिकशास्त्र और रसायन-शास्त्र की तरह राजनीति-शास्त्र के अनुसंधान के तत्व एक ही समय और एक साथ समान नहीं हो सकते।

(2) राजनीतिशास्त्र के student को सिर्फ अपने सजग मस्तिष्क प्रतिभा और पर्यवेक्षण की क्षमता पर ही आश्रित रहना पड़ता है।

(3) रसायनशास्त्र की तरह राजनीतिशास्त्र में प्रयोग को दुहराया नहीं जा सकता

(4) भौतिक-विज्ञान के पारिभाषिक शब्दों के अर्थ और अभिप्राय निश्चित है, लेकिन राजनीतिशास्त्र के पारिभाषिक शब्दों का सम्बन्ध व्यवहार और भावनाओं से होता है।

उपर्युक्त कठिनाइयों के चलते राजनीतिशास्त्र की अध्ययन-पद्धति में भ्रम की सम्भावना बढ़ जाती है, क्योंकि इसका परिणाम अनिश्चित होता है। इसलिए राजनीतिशास्त्र को एक ऐसी पद्धति की आवश्यकता है जिससे उसका वैज्ञानिक अध्ययन किया जा सके।

Scanned with Cam

अध्ययन की विभिन्न पद्धतियाँ

राजनीतिशास्त्र के अध्ययन के लिए सामान्य रूप से स्वीकृत अध्ययन-पद्धतियाँ हैं—

1. Experimental method - राजनीतिशास्त्र के अध्ययन में प्रयोगात्मक पद्धति का सहारा लिया जाता है लेकिन भौतिक विज्ञानों की तरह राजनीतिशास्त्र में प्रयोग नहीं किए जा सकते। लेविस (LEWIS) के अनुसार - We can not do in politics what experiment does in Chemistry. उन्होंने पुनः कहा है कि हम समाज के अंश को अपने हाथ में किसी प्रकार नहीं ले सकते, लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि राजनीतिशास्त्र में प्रयोग हो ही नहीं सकते। मानव-जाति का इतिहास ही राजनीतिशास्त्र की एक महान प्रयोगशाला है।

जब राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांतियाँ होती हैं तब विभिन्न राज्यों की प्रशासनिक क्रियाएँ राजनीति-शास्त्रियों के लिए प्रयोगशाला का काम करती है। Compte-कॉम्टे ने कहा कि "जब कभी राज्य के जिवन में परिवर्तन होता है तो वह एक प्रयोग का रूप होता है। मेरियम के अनुसार राजनीतिशास्त्र के अन्तर्गत प्रयोग का व्यापक क्षेत्र विद्यमान है।

2. Historical method - यह पद्धति प्रयोगात्मक पद्धति का एक भिन्न रूप है, क्योंकि इतिहास राजनीतिशास्त्र की प्रयोगशाला है। किसी भी चीज का स्पष्ट और समग्र ज्ञान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में ही अच्छी तरह हो सकता है। राज्य या समाज का प्रारंभिक स्वरूप क्या था और उसका विकास किस प्रकार और किन परिस्थितियों में हुआ — ये सारी बातें इतिहास द्वारा ही उपलब्ध हो सकती हैं। For example - भारत की वर्तमान शासन-व्यवस्था की सही झलक भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन और उसके सांविधानिक विकास में ही संभव है। राजनीतिशास्त्र इतिहास का ऋणी है। ठीक उसी प्रकार हम यह भी कह सकते हैं कि इतिहास राजनीति-शास्त्र का ऋणी है For example यदि हम England की संसद तथा राजतंत्र के वर्तमान रूप का ज्ञान प्राप्त करना चाहें तो हमें वहाँ के इतिहास का गहरा अध्ययन करना पड़ेगा। LASKI(लॉस्की) का कहना है कि "राज्यों के इतिहास से उपलब्ध अनुभवों को संहिताबद्ध करना ही राजनीतिशास्त्र का मुख्य विषय है। अतः स्पष्ट है कि ऐतिहासिक पद्धति के द्वारा ही राज्य, समाज तथा अन्य सुविधाओं के उद्भव तथा विकास आदि के संबंध में तथ्य एवं आँकड़े उपलब्ध कर उनके आधार पर निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं

Scanned with Cam

Historical method के पक्ष में निम्न तर्क है।

(1) यह पद्धति मानव-विकास के इतिहास को भी हमारे सामने रखती है और इससे हमें यह जानकारी मिलती है कि प्रारंभिक समाज में मानव कैसा था

(2) यह पद्धति राज्य अन्य संस्थाओं की प्रारंभिक स्थिति की जानकारी देती है और बताती है कि आज की संस्थाएँ अपनी प्रारंभिक स्थिति में कैसी थी

(3) अन्य विज्ञानों की तरह ऐतिहासिक पद्धति राजनीतिशास्त्र का प्रयोगशाला है For Example प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्ध की उत्पत्ती के जिम्मेवार कारण आज भी उत्पन्न हो जाएँ तो तृतीय विश्व युद्ध हो सकता है। राजनीतिशास्त्र ऐतिहासिक पद्धति-रूपी प्रयोगशाला में उन कारणों की खोज करता है।

(4) ऐतिहासिक पद्धति हमारी संस्कृति और परम्पराओं की धरोहर है। यह किसी देश और राष्ट्र के सामने उसके इतिहास और संस्कृति को रखकर मरते हुए राष्ट्र की रक्षा कर लेती है। यह इतिहास के महापुरूषों की कुर्बानियों की याद आने वाली मानव-पीढ़ी को देती रहती है।

इसी तरह राजनीतिशास्त्र के अध्ययन प्रणाली में Historical Method के विपक्ष में भी तर्क है जो निम्न प्रकार है।

(1) Historical method के उपर्युक्त लिखित तथ्यों के बावजूद इसकी आलोचनाएँ भी की गई हैं सिजविक ने इसकी आलोचना करते हुए कहा है कि इस पद्धति पर हम पूर्ण भरोसा नहीं कर सकते हैं।

(i) अन्य विज्ञानों जैसे जीव विज्ञान तथा भौतिक विज्ञान आदि की तरह ऐतिहासिक पद्धति सही निष्कर्ष पर नहीं पहुँचती, क्योंकि इन विज्ञानों की तरह यह ठोस और विश्वसनीय आँकड़े प्रस्तुत नहीं करती। विज्ञान में H_2O के संयोग से जल बनता है, लेकिन ऐतिहासिक पद्धति में ऐसा ठोस निष्कर्ष कभी भी नहीं मिल सकता है।

(ii) Lowi ने कहा है कि राज्यों के इतिहास से उपलब्ध अनुभवों को संहिताबद्ध करना राजनीतिशास्त्र का मुख्य विषय है, लेकिन प्रश्न है कि उपलब्ध अनुभवों को संहिताबद्ध कैसे किया जा सकता है क्योंकि बीति हुई घटनाओं के मापने के सही साधनों का विकास अभी तक नहीं हो पाया है।

(iii) ऐतिहासिक पद्धति का आधार पुस्तकालय तथा संग्रहालय है, लेकिन यदि पुस्तकों में तोड़-मड़ोड़ है तो हम उनपर विश्वास कैसे कर सकते हैं इसलिए आज नए सिरे से विश्व इतिहास लिखने की बात चल पड़ी है।

Scanned with Cam

(iv) कभी-2 ऐतिहासिक अनुभवों के आधार पर आज जो प्रयोग हुऐ है उनका विपरित प्रभाव पड़ा है। ऐसे प्रभावों से गुमराह हो जाने की अधिक संभावनाएँ हैं। Lawel (लॉवेल) ने कहा भी है, "राजनीतिशास्त्र एक पर्यवेक्षणात्मक विज्ञान है, न कि प्रयोगात्मक विज्ञान"।

निष्कर्ष यह है कि उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद राजनीतिशास्त्र की ऐतिहासिक पद्धति की अपनी देन है। फ्रेडरिक पोलॉक ने यह सही कहा है कि ऐतिहासिक पद्धति ही इस बात की व्याख्या कर सकती है कि पूर्व की संस्थाएँ अपने वर्तमान रूप में कैसे आई हैं इसके साथ ही इस पद्धति से जन-जीवन को उसके गौरवमय इतिहास की याद दिलाकर एक सूत्र में बांधा जा सकता है।

3. दार्शनिक पद्धति - Philosophical method को निगमनात्मक या आदर्शमूलक पद्धति भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता पूर्वकल्पित मान्यताओं तथा सत्यों के आधार पर ही राजनीतिक समस्याओं के सम्बन्ध में खोज एवं अध्ययन करता है। प्लेटो, रूसो, मिल, हीगेल, सिजविक इत्यादि विद्वानों ने इस पद्धति का समर्थन किया है। प्लेटो ने अपनी पुस्तक The Republic में आदर्श राज्य की पूर्वकल्पित मान्यता को ध्यान में रखते राजनीति के विभिन्न सिद्धांतों का विश्लेषण किया है। इसका दूसरा रूप या मत है कि जगत का मूल तत्व जड़ पदार्थ न होकर चेतन अनुभवजन्य तथा प्रयोगजन्य होता है आत्मा है जिसकी अभिव्यक्ति इस जगत में अनेकों नामों और रूपों में देखते हैं। साथ ही दार्शनिक पद्धति की आलोचनाएँ भी की गई हैं और बताया गया है कि इसका सबसे बड़ा दोष है कि यह वास्तविकता से बहुत दूर है इसमें कपोल कल्पना का विशेष महत्व है ऐतिहासिक कसौटी पर इसे Method को कसा नहीं जा सकता इसलिए लॉस्की ने कहा है किसी तरह की पूर्व-सिद्धि अगे चलकर अवश्य ही समाप्त हो जाती है, क्योंकि उसकी शुरुआत ही स्पष्ट मस्तिष्क से नहीं होती।

4. Sociological method राजनीति शास्त्र में समाज-शास्त्रीय पद्धति का भी अपना स्थान है, क्योंकि व्यक्ति के व्यवहार की रूपरेखा बहुत हद तक सामाजिक और सांस्कृतिक निर्धारकों पर निर्भर करती है। इस सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहार के कारण ही व्यक्ति में कुछ मनोवैज्ञानिक विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं उसकी आदतें, मनोवेशाए, चिंतन धारा और राजनीतिक रवैया इन्हीं बातों पर निर्भर करते हैं समाज के सामूहिक व्यवहार का अध्ययन ही समाजशास्त्र है तथा राजनीतिक

और आर्थिक अध्ययन इसके विशेष पहलू हैं एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है इसका संबंध समाजशास्त्र से है। व्यक्ति के रवैये और व्यवहार, राज्य, संप्रभुता, विधि, राजनीतिक समानता और राजनीतिक स्वतंत्रता आदि सारी बातें समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझी जा सकती है। समाजशास्त्र ऐतिहासिक दृष्टि से तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है कार्ल मार्क्स के पहले के समाजवादी प्रथम श्रेणी में आते हैं जैसे रूसो, मोंटेस्क्यू, बोदां आदि दूसरी श्रेणी में वे समाजशास्त्री आते हैं जिन्होंने अपनी विचार धारा कार्ल मार्क्स के विचारधारा के प्रतिक्रियास्वरूप प्रस्तुत की, कार्ल मार्क्स ने बताया है कि समाज में जितने भी महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं उनमें सबसे बड़ा कारण आर्थिक कारण होता है आर्थिक कारणों से समाज के दो वर्गों में संघर्ष होता है जिससे समाज आगे बढ़ता है।

इस प्रकार समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के पक्ष और विपक्ष में अनेकों बातें कही गई है संक्षेप में कह सकते हैं कि समाजशास्त्र अन्य सामाजिक या राजनीतिक शास्त्रों की जननी है।

5. Observational method - राजनीति शास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत आधुनिक युग में यह भी एक महत्वपूर्ण पद्धति है। इस पद्धति के अनुसार राजनीतिशास्त्र का Student स्वयं संस्थाओं और घटनाओं का अध्ययन करता है लॉवेल ने कहा है "राजनीतिशास्त्र एक पर्यवेक्षणात्मक विज्ञान है न कि प्रयोगात्मक विज्ञान

6. सादृश्यात्मक पद्धति - Comparision method का सबसे बड़ा समर्थक गिलक्राइस्ट है। इस पद्धति के अन्तर्गत राज्य की तुलना अन्य विषयों से की जाती है समाजशास्त्रीय पद्धति, जीवविज्ञानीय पद्धति, न्यायमूलक पद्धति इत्यादि Comparisson method के उपविभाग हैं।

7. परिमाणात्मक पद्धति Quantitative method - आधुनिक युग में राजनीतिशास्त्र के अध्ययन के इस पद्धति का सहारा लिया जाता है। इसके अन्तर्गत DATA आकड़ों और Facts तथ्यों के आधार पर राजनीतिक निष्कर्ष निकाले जाते हैं अमेरिका में यह पद्धति आज काफी लोकप्रिय है

8. Psychological method - चूँकि मनुष्य राजनीतिशास्त्र का मुख्य विषय है, इसलिए राजनीतिशास्त्र के अन्तर्गत मनुष्य के मनोभावों, मनोवेगों तथा अन्य विचारों एवं भावनाओं का Study मनोवैज्ञानिक पद्धति द्वारा किया जाता है। इस पद्धति के समर्थकों ने यावे के साथ कहा है कि राजनीतिक जगत में विवेक का जितना महत्वपूर्ण स्थान है उससे कम मानवीय प्रवृत्तियों, संवेदनाओं तथा आवेगों का नहीं

Scanned with Cam

९. आनुभविक पद्धति - Empirical method - यह पद्धति आधुनिक युग की देन है। यह मूलतः वैज्ञानिक है यह परंपरागत उपागमों से भिन्न है। यह राजनीतिक समस्याओं का अध्ययन मानवीय व्यवहार के माध्यम से करती है। इस दृष्टिकोण के अन्तर्गत किसी घटना को अपनी चेतना या बुद्धि के द्वारा अनुभव किया जा सकता है। इस अनुभव को ऐसी तकनीकों द्वारा मूल्यांकित किया जाता है जो व्यक्ति के प्रभावों से परे होती है। इसके अन्तर्गत व्यक्ति के आचरण के साथ-साथ राजनीति के दलों तथा समूहों का अध्ययन किया जाता है। आधुनिक राजनीति शास्त्रियों ने इसी आनुभविक प्रणाली का सहारा लेकर समाज तथा राज्य की ज्वलंत समस्याओं का समाधान करना चाहा है।

१०. वैज्ञानिक और व्यवहारवादी पद्धति - वर्तमान समय में राजनीतिक व्यवहार का अध्ययन आवश्यक हो गया है। राजनीति शास्त्र के सिद्धांतों, अध्ययन-पद्धतियों तथा दृष्टिकोणों को मानव शास्त्र, समाजशास्त्र, अर्थ शास्त्र तथा मनोविज्ञान के बहुत ही निकट कर दिया है अतएव यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक पद्धति ऐसे नियमों-क्रियाओं और क्रियाविधियों का समूह है जिनका प्रयोग लक्ष्य, वैज्ञानिक विश्लेषण और अन्वेषण के आधार पर विषय के अध्ययन से संबंधित पूर्वाग्रहों और त्रुटियों को दूर कर तथा मूल्य निरपेक्षता की नीति को अपनाकर अधिकाधिक विशुद्धता और वैज्ञानिकता प्रदान करता है इस पद्धति में जो method अपनाए जाते हैं उनमें सर्वेक्षण, केस, प्रश्नावली, साक्षात्कार आदि प्रणाली अपनाए जाते हैं। जनमत मतदान और अंकशास्त्रीय-प्रणाली मुख्य है।

Conclusion के रूप में राजनीति शास्त्र के अध्ययन उपर्युक्त लिखित विभिन्न पद्धतियों के अध्ययन के उपरांत यह स्पष्ट है कि आज राजनीतिक निष्कर्ष पर सिर्फ एक पद्धति के सहारे नहीं पहुँचा जा सकता। जैसे जैसे युग का विकास हो रहा है वैसे-वैसे राजनीतिक अध्ययन की प्रणालियाँ भी बदल रही हैं। राजनीति शास्त्र के अध्ययन के लिए उपर्युक्त सभी पद्धतियाँ उपयोगी हैं लेकिन हम यह नहीं कह सकते कि इन पद्धतियों में कोई पारस्परिक विरोधी नहीं है वास्तव में ये परस्पर-विरोधी होने के स्थान पर एक दूसरे के पूरक भी हैं।

Scanned with Cam